HIND 3003.6 – Hindi Folk Literature

Department of Languages, Cultural Studies & Performing Arts

University of Sri Jayewardenepura

लोक साहित्य तथा शिष्ट साहित्य

सामान्य रूप से अलिखित तथा लोकमानस की स्वाभाविक अभिव्यक्ति को "लोक साहित्य" की संज्ञा दी जाती है तथा लिखित एवं सुसंस्कृत जन की लिखित अभिव्यक्ति "शिष्ट साहित्य" कहलाता है। लोक साहित्य की परिधि को स्पष्ट करते हुए डॉ. श्रीराम शर्मा ने तीन बातों का संकेत किया है।

I. आदिम विचार पद्धति एवं आदिम अनुभूतियों को ज्यों का त्यों या उसमें विकास के चरणों के साथ परिवर्तन करके लोक साहित्य में सुरक्षित रखा जाता है।
II. मौखिक परंपरा से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चला आने वाला वह वाङ्मय साहित्य होता है, जिसके रचयिता तक का पता नहीं होता। मूल रचनाकार के द्वारा रचित स्वरूप में अनेक परिवर्तन करने वाली लोकमानस की ख़रीद भी जिसकी नियति के पीछे कार्य करने वाला प्रमुख तत्तव होता है।
III. रचनाकार का व्यक्तिगत अनुभूति रूप तिरोहित होकर लोकानुभव के धरातल पर प्रतिष्ठित हो जाता है।

इस प्रकार लोक साहित्य की रचना में लोकमानस प्रमुख होता है और उसपर ग्राम्य या नगर का युग परिवर्तन किसी प्रकार का प्रभाव नहीं डालता। लोकमानस में तर्क का अभाव होता है। इसलिए वह अविश्वसनीय चीज़ों पर भी विश्वास कर लेता है। जादू-टोना, झाड़-फूँक, भूत-प्रेत, टोना-टोटका आदि के प्रति लोकमानस का अटूट विश्वास है। यही विश्वास धीरे-धीरे परिष्कृत होकर धर्म का रूप ग्रहण कर लेता है। तात्पर्य यह है कि लोक साहित्य की

रचना में जो लोकमानस कार्य करता है, वही जब संस्कारी एवं परिष्कृत होता है, तब शिष्ट साहित्य की रचना होती है। दोनों में निम्नलिखित भेद हैं।

1) लोक साहित्य का रचयिता अज्ञात होता है। *इसके विपरीत शिष्ट साहित्य के रचयिता का नाम ज्ञात होता है।*
2) लोक साहित्य मौखिक परंपरा या वंश-परंपरा में सुरक्षित रहता है। *शिष्ट साहित्य सुरक्षित रहता है, इसमें वंश-परंपरा का कोई स्थान नहीं है।*
3) लोक साहित्य की भाषा अकृत्रिम एवं लोक भाषा होती है। इसकी भाषा, सिद्धांतों में नहीं बँधती है, *जबकि शिष्ट साहित्य की भाषा सुसंस्कृत, परिनिष्ठित एवं व्याकरणों के नियमों में आबद्ध होती है एवं इसमें साहित्य शास्त्र की मान्यता का पालन किया जाता है।*
4) लोक साहित्य में रचनाकार का व्यक्तित्व नहीं दिखाई पड़ता है। क्योंकि वह लोकमानस की ख़रीद पर चढ़ने के कारण रचनाकार का व्यक्तित्व नष्ट कर देता है। *शिष्ट साहित्य में रचनाकार का व्यक्तित्व सर्वदा ग्रंथ में प्राप्त होता है। क्योंकि वह केवल एक रचनाकार होने के कारण ऐसा करने में समर्थ होता है।*
5) लोक साहित्य परंपरागत प्राप्त अनुभूतियों का संग्रह होता है। उसमें लोक जीवन की अनुभूतियों, लोक विश्वासों, धार्मिक विश्वासों, रीति-रिवाज़ों आदि की अभिव्यक्ति होती है। *शिष्ट साहित्य लोकमानस की सुसंस्कृत, परिष्कृत अनुभूतियों को ग्रहण करता है तथा साहित्य शास्त्र के साँचे में ढलता है। इसमें साज-सँवार की विशिष्ट स्थान मिलता है।*
6) लोक साहित्य में लोक जीवन की आंचलिक अनुभूतियों की प्रमुखता रहती है। *शिष्ट साहित्य में यदि कहीं लोक जीवन की आंचलिक अनुभूतियों को स्थान मिलता भी है तो उसे सार्वभौम बना दिया जाता है।*

इधर शिष्ट साहित्य में भी कुछ ऐसी नयी विधाओं का जन्म हुआ है, जिनमें लोक साहित्य की बहुत सारी विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। आंचलिक उपन्यास, आंचलिक कहानी, समकालीन कविता को उदाहरण स्वरूप दिया जा सकता है। इस विधा में आंचलिक लोक जीवन की अभिव्यक्ति, अंधविश्वास, मान्यताओं आदि का वर्णन विशेष रूप में मिलता है। यही कारण है कि हिंदी साहित्य की इस विधा का नाम "आंचलिक उपन्यास" या "आंचलिक कहानी" पड़ा। यह विधा शिष्ट साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा लोक साहित्य के अधिक निकट है। वैसे तो सभी युगों का जो साहित्य मिलता है, उसमें लोकमानस के विश्वासों, अनुभूतियों, रीति-रिवाज़ों आदि को स्थान मिलता है।